## बाईबल अध्ययन

## चगांई सेवकाई सप्ताह

## 2019

## विषयः ''मुझे किस ने छुआ?'' लूका 8:44-46

## विषयः अदृश्य व्यक्ति सदृश्य बने

**मरकुस 14:3-9**

हम ऐसे संसार में रहते हैं जहाँ बहुत सी दिशाओं की ओर हम खिंच जाते हैं और अक्सर अपने आप को वंचित व व्यर्थ महसूस करते हैं। जीवन की बहुत सी आवश्यकतायें होती हैं, प्रत्येक व्यक्ति बहुत सी परिस्थितियों व समस्याओं का सामना करता है वह उन के लिये असहनीय होता है जिस से वह लगातार सहायता व्यवस्था की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

आईये हम मरकुस 14:3-9 पद देखें, इस में हम बिना नाम की स्त्री के बारे में पढ़ते हैं जो संगमरमर के पात्र में जटामासी (पौधे की जड़) का बहुमूल्य शुद्ध इत्र ले कर आई (जिस का मूल्य 300 दीनार से अधिक था, जो लगभग एक साल के वेतन के बराबर था) उस ने पात्र को (सील) तोड़ कर यीशु मसीह के सिर पर उण्डेला, जिस प्रकार अन्तिम संस्कार के समय यीशु मसीह का अभिषेक किया गया। वह स्त्री रब्बी को स्पर्श करना चाहती थी परन्तु उस ने यीशु मसीह को अदृश्य रूप से स्पर्श किया। यीशु ने अपने शिष्यों को आदेश दिया कि "उसे छोड़ दो, उस ने मेरे साथ भलाई की है...(पद 6)। जो कुछ वह कर सकी, उस ने किया..."(पद 8)। शिष्य तथा अन्य व्यक्ति जो वहाँ उपस्थित थे उन्होंने उस स्त्री के प्रति अपना गुस्सा दर्शाया। परन्तु वह जानती थीं कि यही परमेश्वर का पुत्र, मसीहा, उद्धारकर्त्ता, चंगाई देने वाला तथा छुटकारा देने वाला है। उस ने जो कार्य किया उस से वह बिना नाम की स्त्री यीशु मसीह की सच्ची शिष्या बन गई। यह वही स्त्री है, जो प्रेम का साधन बनी, जो प्रेम उसे प्राप्त हुआ था उस ने उसी प्रेम को अन्य व्यक्तियों के साथ बाँटा और दुखी व्यक्तियों के जीवन में चंगाई व सम्पूर्णता लाई। वह केवल एक विश्वास का 'स्पर्श' था, यद्यपि वह अदृश्य स्पर्श था उसी के द्वारा उस के जीवन में चंगाई द्वारा बदलाव की आवश्यकता थी वह उसे प्राप्त हुई।

हम यहाँ कुछ क्षण के लिए रूकें और उन बिना नाम के अदृश्य व्यक्तियों के बारे में सोचें जो हम से बहुत दूर हैं जैसे- स्त्री, बच्चे, वृद्ध, मानसिक रोगी, बहिष्कृत व्यक्ति, बाँझ महिलायें, ऐसे व्यक्ति जो पुराने रोग से पीड़ित हैं, ड्रगस की आदत, घरेलू हिंसा से पीड़ित, बाल यौन शोषण, अविवाहित मातायें, ऐसे व्यक्ति जिन के साथ भिन्न प्रकार के यौन व्यवहार किये जाते हैं, अर्न्तजातीय दम्पत्ति व अन्य व्यक्ति। इन पर अक्सर गुस्से में आरोप लगाये जाते हैं और अस्वीकार्य किये जाते हैं। यह समय है उस स्त्री के लिये कहे गये यीशु मसीह के शब्दों को दोबारा सुनें "उसे छोड़ दो, उसे क्यों सताते हों?" (पद 6)। "सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जायेगा, वहाँ उस के इस काम की चर्चा भी उस के स्मरण में की जायेगी" (पद 9ब)।

**चिन्तन के लिये प्रश्नः**

1. ऐसे बिना नाम के व्यक्तियों को पहचाने जो आप के आस पास हैं, जिन की आप ने उपेक्षा की व अनदेखा किया?

2. ऐसे कुछ कार्य जो आप दुखी व्यक्तियों को ढूँढ कर उन्हें बचाने के लिये करेंगे?

3. ऐसे ठोस सुझाव दें जिस से चर्च तथा स्वास्थय केन्द्र संस्थायें, जीवन दान स्पर्श के साधन बन जायें?

**प्रार्थनाः**

सभी व्यक्तियों के प्रिय परमेश्वर, दुखी व्यक्तियों की आवश्यकताओं को पहचानने के लिये हमारी आँखें खोलें। उन व्यक्तियों के लिये जिन की हानि को पूरा करने, चंगाई तथा पुर्नस्थापना पाने के लिये कोई सहायक नहीं है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की सहायता करें जिस से हम शान्ति व सम्पूर्णता के साधक बन सकें, हम उन्हें स्पर्श कर सकें, उन की अगुवाई उन के विश्वास तथा उत्साह के लिये करें जिस की हमें आज्ञा मिली हैं। आमीन!

**डॉ सुनीता नोरोनहा**

(यूनियन बाईबल सेमीनरी, पूना की एसोसिएट प्रोफेसर तथा पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम की डीन हैं)

**मुख्य विषयः 'मुझे किस ने छुआ?''**

**उप विषयः <u>विश्वास का स्पर्श, परमेश्वर के उत्तर का निमन्त्रण है</u>**

**बाईबल के पदः मरकुस 5:21-34 तथा लूका 8:42ब-48**

एक स्त्री जिसे लहू बहने का रोग था, इस में विश्वास के स्पर्श से चंगाई की कहानी है। वह बिना नाम की स्त्री वास्तव में अशुद्ध व समाज द्वारा बहिष्कृत की गई थी इसीलिये उसे संगति और धार्मिक रीतियों में आने की आज्ञा नहीं थी। उस की बहुत समय की दयनीय स्थिति और पहले की बहुत से स्वास्थय केन्द्रों व व्यवसायिक चिकित्सकों के साथ पीड़ा दायक अनुभव के कारण वह यीशु मसीह से सब के सामने सहायता नहीं माँग सकती थी। वैसे, वह बहुत से ज़रूरतमन्द व्यक्तियों की भीड़ में खो गई थी, जो यीशु मसीह के आस पास थी और हो सकता था वह प्रयास उस के लिये आखिरी था। उस के स्थिर विश्वास व उत्साह के द्वारा ही वह यीशु मसीह का ध्यान अपनी ओर खींच पाई- यीशु मसीह के लिये एक सन्देश था कि याईर की बेटी जिसे वह चंगा करने जा रहे थे उस के बदले उन का ध्यान अपनी ओर करना चाहती थी।

यीशु मसीह का बहुत शीघ्र उत्तर था, शायद वह स्वंय भी नहीं जान पाये। यीशु मसीह की चंगाई की शक्ति निकली और उस स्त्री का लहू बहना बन्द हो गया। वह स्त्री वही-शारिरिक चंगाई चाहती थी।

परन्तु यीशु मसीह ने अन्य चंगाई भी दी। यीशु मसीह ने सब के सामने प्रश्न किया "मुझे किस ने छुआ?" जिस व्यक्ति ने उस के वस्त्र को छुआ वह केवल उसे सामने लाने का प्रयास ही नहीं था परन्तु उस के भय को दूर करने व सार्वजनिक रूप से चंगाई की घटना की गवाही देने का एक साहसिक आमन्त्रण था।

पतरस उस असाधारण स्पर्श से विस्मित था, यीशु मसीह का शक्तिशाली कार्य प्रकट हुआ कि वह परमेश्वर के कार्य करने का साधारण साधन नहीं है परन्तु वास्तव में वह दैवीय शक्ति का स्त्रोत है।

यीशु मसीह ने उसे 'पुत्री' कह कर बुलाया (जिसे पूरा समुदाय अशुद्ध मानता था) और घोषणा की 'तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है', उसे परमेश्वर के परिवार में स्वागत किये जाने का और समाज में दोबारा स्थान दिलाने का विश्वास दिलाया।

'कुशल' शब्द कहने से (लूका 8:48) यीशु मसीह ने परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध तथा विश्वासी समुदाय में स्वागत किया और उस को पूर्ण रूप से मानव जाति में वापिस लाये। उस के विश्वास द्वारा स्पर्श करने से परमेश्वर का उत्तर मिला।

वैसे इस घटना की देरी का मूल्य याईर को चुकाना पड़ा - वह मर गई, परन्तु यीशु मसीह ने उसे जीवित कर दिया। फिर भी कहानी एक दूसरे पर निर्भर है, विश्वास के स्पर्श का भेद खुलने से परमेश्वर की ओर से तुरन्त उत्तर मिला। यह विश्वासी समुदाय तथा भारत की देखभाल करने वाली संस्थाओं के लिये यीशु मसीह का अनुसरण करने का आदेश है, जो दुखी, निम्न स्तर, बिना नाम व 'मानवता रहित' जो इस भीड़ में खो गये हैं उन की देखभाल करते हैं।

**विचार के लिये प्रश्नः**

1. किन तरीकों से हम चंगाई मिशन तथा सेवकाई द्वारा शारिरिक व मानव जीवन में गहरे स्तर के स्पर्श से आगे जा सकते हैं।

2. विश्वासी समुदाय तथा देखभाल करने वाली संस्थाये, जो 'भीड़' में खो गये हैं उन के लिये संवेदनशील हो कर कैसे कार्य कर सकते हैं?

प्रार्थनाः हे प्रभु जो 'भीड़' में खो गये हैं केवल उन के लिये ही नहीं परन्तु जो इन के लिये कार्य को आगे बढाते हैं उन के लिये संवेदनशील हों। हम और हमारा विश्वासी समुदाय तथा देखभाल करने वाली संस्थायें सच्चाई से बुलाहट तथा गवाही का कार्य यीशु मसीह के नाम से लगातार इस संसार में करते रहें। आमीन।

फादर डॉक्टर जार्ज वर्गिस
यू बी एस, पूना

**पाठ मरकुस 6:53-56**

कल्पना कीजिये तेज़ धूप में, रेगिस्तान में एक यात्री बेहोश हो जाये। उस से केवल कुछ मीटर की दूरी पर, एक बहुत बड़े जार में ठण्डा पानी मुफ्त में उपलब्ध है। वह नहीं जानता था कि कुछ ही दूरी पर पानी उपलब्ध है। थकावट व निर्जल रहने से जीवन देने वाले पानी तक वह नहीं पहुँच पा रहा था। यदि कोई उस की सहायता के लिये ना आये तो उस का जीवन जल्द ही डूब जायेगा।

आज हमारे आस पास भी बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जिन की विभिन्न आवश्यकतायें हैं। आवश्यकतायें भिन्न प्रकार की सकती हैं, शारिरिक, भावनात्मक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक तथा आत्मिक। बहुत से व्यक्ति हैं जो कष्ट झेल रहे हैं, सारी आशायें खो चुके हैं, अकेले व उदासीन हैं। हम उन्हें चंगाई तथा आशा कैसे दे सकते हैं।

सब से पहले आज के बाईबल पद के तीन पदों का संक्षिप्त में अध्ययन करते हैं।

सब से पहले व्यक्तियों द्वारा यीशु मसीह को पहचानना। उन्होंने यीशु मसीह को चमत्कार करने वाले के रूप में पहचाना, जिस ने 5000 व्यक्तियों को भोजन खिलाया, दुष्टात्मा से जकड़े व्यक्तियों को छुटकारा दिलाया, बीमारों को चंगा किया तथा मृतकों को जिलाया। यहाँ तक कि उन्होंने जिस स्त्री को लहू बहता था उसे चंगा किया, जिसे डॉक्टर चंगा नहीं कर सके। इसीलिये यीशु मसीह की शक्ति व दया की पहचान हमारा पहला कदम होना चाहिये। सुसमाचार को प्रार्थनापूर्ण पढ़ने से विश्वास की आँखों से हम देखने योग्य हो जाते हैं। उस के बाद हम यीशु मसीह के स्पर्श द्वारा चंगाई व सम्पूर्णता की प्रतिज्ञा की आज भी पहचान करते हैं।

दूसरा, व्यक्ति जो भी कार्य उस समय कर रहे होते थे, उसे छोड़ कर जहाँ भी यीशु मसीह होते थे वे बीमारों को उन के पास लाते थे। वे बीमारों को यीशु मसीह के पास लाने के लिये चारपाई पर लाते थे। आज हम बहुत व्यस्त हैं और हमारे पास किसी की सहायता करने के लिये समय नहीं हैं। अक्सर, हम ज़रूरतमन्दों, दुखी, कुचले हुये, परेशान, गरीब जो हमारे आस पास हैं उन्हें अनदेखा करते हैं। हमें परमेश्वर से क्षमा माँगने, और अधिक संवेदनशील व दयालु होने की आवश्यकता है। तभी हम ज़रूरतमन्दों तक पहुँच सकते हैं और उन्हें यीशु मसीह के स्पर्श से जोड़ सकते हैं जिस से वह स्पर्श को पहचान पायें।

तीसरा, जिस ने भी यीशु मसीह के वस्त्र के किनारे को छुआ वह चंगे हो गये। कमवल थोड़े से व्यक्तियों ने नहीं पर सभी ने चंगाई पाई। हमें यीशु मसीह की चंगाई की शक्ति व पुर्नस्थापना पर विश्वास करने की आवश्यकता है। मानवजाति के लिये यीशु मसीह के प्रेम तथा सहायता के लिये जब हम पुकारते हैं तो उत्तर मिलता है इस पर विश्वासकरने की आवश्यकता है। यदि सच में हम यीशु मसीह की शक्ति पर विश्वास करते हैं, तो हमें ज़रूरतमन्दों के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। हमें यीशु मसीह का प्रेम उन के साथ बाँटना चाहिये और चंगाई के स्पर्श को स्वीकार करने के लिये उन्हें आमन्त्रित करना चाहिये।

**प्रश्नः**

1. उन तरीकों के बारे में सोचें जिस से आप इस सप्ताह में यीशु मसीह को अधिक जान सकते हैं तथा उन की शान्ति व दया को पहचान सकते हैं?

2. आप अपने जीवन को दोबारा कैसे व्यवस्थित कर सकते हैं जिस से आप कम से कम प्रतिदिन एक ज़रूरतमन्द व्यक्ति की सहायता के लिये समय निकाल सकें?

3. क्या सच में आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह के स्पर्श द्वारा चंगाई व सम्पूर्णता मिलती है? यदि हाँ तो यह विश्वास अन्य व्यक्तियों के साथ कैसे बाँट सकते हैं?

**प्रार्थनाः** प्रिय प्रभु यीशु मसीह, आप को एक शक्तिशाली तथा दयालु चंगाईकर्त्ता के रूप में पहचानने में सहायता करें। कृपया मुझे अविश्वास, स्वार्थीपन तथा दयालुता की कमी को दूर करने योग्य बनायें। आज अपने स्पर्श के अनुभव करने में मेरी सहायता करें, जिस से अन्य व्यक्तियों को आप की ओर ला सकूँ। आमीन।

डॉ मिसिज़ वसन्था थॉमस,
नेशनल डायरेक्टर, अर्पणा मिन्सिट्रीज़,
पूना।

**लूका 8:44-46**

**चंगाई स्पर्श की शक्ति/विश्वास की यात्रा चंगाई की ओर**

प्रतिदिन के कार्यों में विश्वास तथा अनुग्रह द्वारा हमें शक्ति मिलती रहती है। विश्वास द्वारा पुर्नस्थापना, समावेश तथा स्वीकार्य प्राप्त होती है। चंगाई की शक्ति विश्वास द्वारा प्रत्येक को स्वंय प्राप्त होती है। जब लूका 8:48 में यीशु मसीह पूछते हैं 'मेरे अन्दर से शक्ति निकली है,' यीशु मसीह ने बिना कहे दो क्षेत्रों को प्रस्तुत किया। यह सत्य है कि यीशु मसीह दैविक शक्ति को लाने वाले हैं तथा अन्य व्यक्तियों को समझाने योग्य प्रभु हैं। यीशु मसीह अपने आप को व चंगाई शक्ति को सब के सामने प्रकट करते हैं।

इस सन्दर्भ में यीशु मसीह की चंगाई शक्ति तथा विश्वास के उत्तर का आपस में सम्बन्ध है। शब्द 'विश्वास' प्रकाशमय किया गया तथा यीशु मसीह के प्रचार द्वारा चंगाई के सन्दर्भ की जानकारी मिली। उस स्त्री का विश्वास जिसे लहू बहने का रोग था, समाज की सीमाओं, परिस्थितियों व सब से महत्त्वपूर्ण वहाँ के कानून द्वारा परखा गया। हाँ, हर प्रकार के मानवीय रचना व सीमाओं से अधिक यीशु मसीह में उस के विश्वास की प्रतिक्रिया थी कि यही उसे चंगा कर सकते हैं। उस के विश्वास के द्वारा केवल उसे शारिरिक चंगाई नहीं मिली परन्तु सम्पूर्ण रूप से वह चंगी हुई और दोबारा वह पहले जैसी स्वस्थ हो गई।

स्पर्श बहुत शक्तिशाली होता है। हम अपने शब्दों, क्रियाओं तथा व्यवहार द्वारा अन्य व्यक्तियों को स्पर्श करते हैं। परमेश्वर रोगीयों, पीड़ितों, गरीबों, निम्न स्तर वालों तथा सताये हुये व्यक्तियों के भी परमेश्वर हैं। वर्तमान समय में पक्षपात, विभाजन, अनाथ, लिंग असमानता, गरीबी, बलात्कार, भिन्न प्रकार की कठिनाईयों व सामाजिक अशान्ति से हमारे मस्तिष्क को परेशान करती हैं, यह सब हमारे लिये चुनौतियाँ हैं। परन्तु यीशु मसीह के स्पर्श की शक्ति है जो हमें परेशानी के समय चंगाई की ओर ले जाती है। यही शक्ति हमें आवश्यकता के सही क्षणों में अभ्यास करने के लिये प्राप्त होती है।

यीशु मसीह ने उस महिला को स्वीकार किया उसे अपना कह कर बुलाया, उस महिला के सक्रिय विश्वास का परिणाम था। यहाँ तक कि आज भी विश्वास की यात्रा को विभिन्न सीमाओं तथा जीवन की परिस्थितियों द्वारा परखा जाता है। रोगों को अस्वीकार, भय, शर्म, निराशा, शक तथा मानव जाति का अन्ध विश्वास उन के विश्वास की यात्रा में चंगाई देने वाले स्पर्श पर ध्यान केन्द्रित करता है। हमारे आस पास बहुत कुछ होता है, जो जीवन हम विश्वास व अनुग्रह से जीते हैं उस से आसानी से भटक सकते हैं। हम प्रतिदिन विभिन्न रूप के राक्षसों का सामना करते हैं, और बिना सोचे झुंझलाहट बढ़ती जाती है व व्यवहार बदल जाता है। ऐसे समय में हमारा अपने आप पर विश्वास व परमेश्वर में समझ पर प्रश्न हो जाता है। भय व शंका हट जाती है और हम

भूल जाते हैं कि परमेश्वर तक पहुँचने के लिये एक प्रार्थना की दूरी है। ऐसे समय में यीशु मसीह की चंगाई देने वाली स्पर्श की शक्ति से पुर्नस्थापना व चंगाई मिलती है।

**विचार के लिये प्रश्नः**

1. परमेश्वर की ओर से चंगाई देने वाली शक्ति जो हमें मिलती है, क्या हम उसे आगे बढ़ाने वाले बनेंगे?

2. क्या हम सीमायें पार कर के परमेश्वर की ओर से मिले स्पर्श व चंगाई की शक्ति का अभ्यास व्यक्तियों के लिये कर सकते हैं?

## ''मुझे किस ने छुआ''

**पुराना नियम-** यशायाह 6:1-8

**पवित्र वचन-** रोमियों 12:1-2

**सुसमाचार-** लूका 8:43-48

सम्पर्क करने के लिये स्पर्श एक सब से महत्त्वपूर्ण साधन है। हमारे स्पर्श की संवेदना का नियन्त्रण नाड़ी के बड़े नेटवर्क द्वारा किया जाता है तथा त्वचा की गहरी परत तक पहुँचता है। यह स्पर्श पाने के बाद सन्देश मस्तिष्क तक पहुँचता है जहाँ इस का विशलेषण होता है और इस सन्देश द्वारा उपयुक्त कार्य किया जाता है। यह सब केवल कुछ क्षणों में होता है। हम सब को अच्छे व बुरे स्पर्श के बारे में जानकारी है।

पुराने नियम के भाग में यशायाह भविष्यवक्ता ने यहूदा के राज्य के विद्रोही व्यक्तियों के लिये सन्देशवाहक के रूप में चुने जाने पर सकारात्मक उत्तर दिया। इस सन्देश को देने के लिये परमेश्वर ने साराप को भेजा जिस ने चिमटे से वेदी पर से अंगारा उठा कर यशायाह के होठों को हुआ। उस शक्तिशाली स्पर्श से यशायाह, परमेश्वर के सन्देशवाहक के रूप में शुद्ध हुआ और उस के सब अधर्म दूर हुये।

वह महिला जो 12 वर्ष से लहू बहने के रोग की पीड़ा सह रही थी उस की दयनीय स्थिति थी। वह शारिरिक रूप से थक चुकी थी और लगातार लहू बहने से उस के अन्दर रक्त की कमी हो गई होगी। रक्त की कमी होने से, शरीर में रक्त संचार के लिये ऑक्सीज़न की कमी हो जाती है जिस से शरीर के महत्त्वपूर्ण अंगों पर प्रभाव पड़ता है। बहुत से डॉक्टरों के पास जाने से तथा दवाईयों पर बहुत अधिक खर्च होने के कारण उस के आर्थिक साधन भी समाप्त हो गये होंगे। लैव्यव्यवस्था के कानून के अनुसार वह औपचारिक रूप से अशुद्ध थी और समाज में निम्न मानी जाती थी, उसे मन्दिर में आराधना में भाग लेने की अनुमति नहीं होगी। वह बहुत निराश हो चुकी थी और चंगाई पाना चाहती थी इसीलिये केवल यीशु मसीह में उसे पुर्नस्वस्थ होने की आशा दिखाई दी। यहूदी रब्बी किसी स्त्री द्वारा, उस से भी अधिक 'अशुद्ध' स्त्री द्वारा छूआ जाना स्वीकार्य नहीं था। इसीलिये उस ने चुपके से पीछे से आ कर यीशु मसीह के वस्त्र के किनारे को छू लिया। वह स्त्री उसी समय चंगी हो गई इस में मुझे कोई शक नहीं है परन्तु यीशु मसीह को विश्वास का स्पर्श महसूस हुआ और उन्होंने पूछा मुझे किस ने छुआ, उस भीड़ में जो उन पर गिरी पड़ती थी, किसी का स्पर्श भिन्न था। वह स्पर्श उस स्त्री का था, जिसे विश्वास था जिस से उसे चंगाई मिली।

जब यीशु मसीह ने कोढ़ियों के पास जा कर उन्हें स्पर्श किया, ऐसा करने के लिये कोई सोच भी नहीं सकता था। इस प्रकार से यीशु मसीह ने उन व्यक्तियों की अशुद्धता अपने ऊपर ले ली और स्वंय को 'अशुद्ध' कर लिया। उन्होंने स्वंय को निम्न बनाया, जब हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया और क्रूस पर शर्मनाक मृत्यु सही उस से हमें बचा लिया। हम व्यवस्थाविवरण 21:22-23 में पढ़ते हैं कि जो वृक्ष पर लटकाया जाये वह परमेश्वर की ओर से शापित है।

जो व्यक्ति चंगाई सेवकाई में लगे हैं, उन के लिये वह क्या कर रहे हैं जो पीड़ा, वेदना, दुखी, घायल, प्रतीक्षा, अस्थिर, संक्रामित घावों व रोगों से ग्रसित हैं। यह बहुत आसान है कि हम ऐसे रोगियों से अलग हो जायें और किसी अन्य व्यक्ति के पास उन्हें भेज दें। परन्तु यीशु मसीह हमारे लिये एक उदाहरण हैं हमें उन की तरह बनना चाहिये जिस से हम उन व्यक्तियों तक पहुँच सकें जो समाज से अलग तथा निम्न स्तर पर हैं। जिन व्यक्तियों को आवश्यकता है क्या हमारे अस्पताल व चर्च उन का स्वागत करते हैं? यीशु ने कहा "वैद्य भले-चगों को नहीं परन्तु बीमारों के लिये आवश्यक हैं।" (मत्ती 9:12) क्या हम अपने पड़ोसियों के लिये नेक सामरी हैं?

**डॉक्टर नितिन थीयोडर जोसेफ**

## विशेष स्पर्श की महत्त्वत्ताः अस्वीकार्य से पुर्नस्वास्थय

### मरकुस 1:40-45

यीशु मसीह की सेवकाई में तीन प्रकार के मिशन थेः उपदेश देना, प्रचार करना तथा चंगाई देना (मत्ती 4:23)। बहुत तरीकों से चंगाई दी गई। ज़रूरतमन्द व दुखी व्यक्तियों का ध्यान रखना भी स्पर्श करने का एक तरीका था (लूका 7:11-14; लूका 8:44-48; मरकूस 1:40-45, मरकुस 7:31-37)। यीशु मसीह द्वारा मृतक, कोढ़ी तथा अनियमित मासिक धर्म से पीड़ितों को स्पर्श करना यहूदी कानून के अर्न्तगत अशुद्धता है। यीशु मसीह के पास दो विकल्प थेः या तो यहूदी कानून मानते या उस कठोर कानून को अनदेखा करते, यीशु मसीह ने सोच समझ कर बाद वाले विकल्प को चुना।

बाईबल के उस समय में कोढ़ को भंयकर रोग माना जाता था। यह रोग तेज़ी से कुरूप बना देता है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में कोढ़ की अवधि के बारे में विस्तार से बताया गया है (लैव्यव्यवस्था 13:14; गिनती 5:3)। कोढ़ी व्यक्तियों से कहा जाता था कि वह 'अशुद्ध, अशुद्ध' चिल्लाते जायें, जिस से समाज के अन्य व्यक्ति दूर रहें और स्पर्श न करें, शारिरिक, मानसिक, सामाजिक तथा धार्मिक स्तर पर उन्हें अस्वीकार किया जाता था। पुराने नियम में केवल दो बार रिकार्ड किया गया है कि परमेश्वर ने कोढ़ी को चंगा किया (गिनती 12:10-15 [7 दिन का अलगाव]; दूसरा राजा 5:1-14 [7 डुबकी])। जब नामान कोढ़ से पीड़ित था, शायद एलीशा भविष्यवक्ता जानते थे किं यहूदी की आज्ञा है कि नामान यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाये (2 राजा 5:10)। इस में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि कोढ़ी छूने योग्य नहीं होते थे। वैसे मरकुस 1:40-45 मेंकोढ़ीयों ने यीशु मसीह के बारे में सुना तो वह किसी भी तरह चंगे होना चाहते थे जिस से वह समुदाय व समाजके भाग बन सकें। कोढ़ी के शब्दों को सुनें 'यदि आप चाहें' (बिना कल्पना किये) 'तो मुझे चंगा कर सकते हैं' (यीशु मसीह की योग्यता पर शक किये बिना) यीशु मसीह ने सच्चे साधन का नमूना दिखाया। यीशु मसीह दया से भर गये (वास्तव में इस का अर्थ गहरी दया है) और सब बन्धन तोड़ दिये। उन्होंने अछूतों को स्पर्श किया(लगातार चलते

आ रहे यहूदी नियमों के धार्मिक बन्धनों को नहीं दर्शाया) और उस से कहा 'मैं चाहता हूँ' (सामान्य ज्ञान-वर्तमान काल, अधिकारिक घोषणा) : 'शुद्ध हो जा' (सामन्य ज्ञान-सक्रिय, निर्णयक क्रिया प्राप्त हुई।) और तुरन्त उस का कोढ़ चला गया और वह शुद्ध हो गया। जो उन्हें देख रहे थे उन्होंने देखा कि वह पूर्णरूप से चंगा हुआ। यीशु मसीह ने उस कोढ़ी से कहा कि चंगाई पाने के बाद वह याजक को अपने आप को दिखाये, जो कठोर धार्मिक नियमों को मानते थे। 'परन्तु' उस कोढ़ी ने बाहर जा कर सब को बताया (वास्तविक अर्थ में अपनी चंगाई की घोषणा की) दैविक स्पर्श ने चंगाई पाने में उस की अगुवाई की।

हम भी इस अखण्ड संसार में रहते हैं, इस संसार में ज्योति, लिंग तथा भंयकर रोग की दीवारें हैं। यद्यपि हम तकनीकी क्षेत्र की सीढ़ी पर सब से ऊपर हैं, परन्तु चर्च व समाज में बहुत से व्यक्ति 'अन्य' व्यक्तियों को अछूत समझते हैं। यीशु मसीह के शिष्य होने के नाते हम से यह आशा की जाती है कि हम विभाजन की कठोर दीवार को तोड़ें और इस अखण्ड संसार के चर्च व समाज में स्वस्थता लायें।

**विचारः**

1. क्या आप यीशु मसीह जो वास्तविक साधन हैं उन का स्पर्श पाना या उन के द्वारा स्पर्श करवाना चाहते हैं?

2. विश्वास द्वारा यीशु मसीह को स्पर्श करने में कौन से कारण आप को रोकते हैं?

3. क्या आप आज अन्य व्यक्तियों के जीवन को स्पर्श करने का चुनाव सोच समझ के कर रहे हैं?

**प्रार्थनाः**

प्रभु मेरे जीवन में मुझे विशेष स्पर्श की आवश्यकता है, वह स्पर्श जिस से दोबारा स्वस्थ जीवन पायें। इस के साथ ही मेरी इच्छा है कि 'अन्य व्यक्ति' जो अस्वीकार्य व उपेक्षित हैं उन को स्पर्श करूँ। मेरी सहायता करें जिस से मैं 'अन्य व्यक्तियों' को आप की नज़रों से देखूँ! आमीन।

## कलिसियाः दैवीय स्पर्श का साधन

**प्रेरितों के काम 3:1-10**

'मुझे किस ने छुआ' पीड़ित मानवता के लिये परमेश्वर का सुदृढ़ भाव था। उत्पत्ति की पुस्तक के पहले तीन अध्याय में संसार की रचना का दृढ़ आरामदायक सन्देश परमेश्वर के स्पर्श के द्वारा आया है। परमेश्वर की इच्छा मानवजाति की सचल सम्पत्ति तथा बाईबल में इस्त्राएल समुदाय पूरे इतिहास में मानवजाति के बारे में दर्शाया गया है।

सुसमाचार में चंगाई तथा चमत्कारों के द्वारा दैनिक-मानव सम्बन्धों के प्रभाव की ओर संकेत किया गया है। विशेष रूप से जब परमेश्वर के निज व्यक्ति कठिन समय से गुज़रते हैं तो परमेश्वर की दृढ़ उपस्थिति सदा उन के साथ रहती है। यीशु मसीह द्वारा पूछा गया प्रश्न 'मुझे किस ने छुआ' जब उस पीड़ित स्त्री ने चंगाई का अनुभव किया, इस बड़े दृश्य में पीड़ित मानव के लिये परमेश्वर का मिशन का कार्य दिखाई दिया होगा; यद्यपि स्पर्श की शुरूआत उस स्त्री ने की थी इसीलिये यीशु मसीह का प्रश्न 'मैं किस से छू गया' नहीं था परन्तु 'मुझे किस ने छुआ' था।

प्रेरितों के काम 3:1-10 की कहानी में कलीसिया की चंगाई सेवकाई का बड़ा पहलू पाया जाता है। कहानी में पतरस और पीड़ित व्यक्ति के बीच स्पर्श के बाद क्रिया को दर्शाया गया है 'उस ने उस का दाहिना हाथ पकड़ कर उठाया'।

पतरस के इस कार्य से कम से कम हम बाईबल के तीन सत्य समझ सकते हैं।

**1. मनुष्य का स्वभावः एक अनजान ज़रूरतमन्द व्यक्ति सुन्दर द्वार पर बैठा था।**

यहाँ पर एक व्यक्ति के बारे में बताया गया है जो परमेश्वर की उपस्थिति में भी अन्य व्यक्तियों पर निर्भर रहता था, परन्तु परमेश्वर की सम्पूर्णता की उपस्थिति का अनुभव नहीं था। वह सामान्य जीवन जीने में अयोग्य था परन्तु बहुत से कार्य करने में सीमित था। एक विरोधाभास तस्वीर थी, ज़रूरतमन्द व्यक्ति सुन्दर द्वार पर बैठा रहता था, वह अनजान व्यक्ति था, उसे मनुष्य के हाथ के स्पर्श की कामना व आशा थी।

**2. परमेश्वर की चंगाई के साधनः चंगाई देने में परमेश्वर की योग्यता पर विश्वास**

किस कारण पीड़ित मनुष्य के लिये पतरस की वचनबद्धता द्वारा चंगाई सम्भव हो सकी। अन्य व्यक्तियों ने उसे देखा होगा परन्तु पतरस को परमेश्वर पर चंगाई देने की योग्यता पर विश्वास था, जिस से पीड़ित व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव पड़ा। यह स्वीकार करना कि दैविक चंगाई के बहाव का साधन एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा थी, जो हमें याद दिलाता है कि हमारा प्रयत्न करना चंगाई सेवकाई का एक भाग है। हो सकता है कि हम अपने अविश्वास के कारण सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति को सीमित कर दें। अन्य 'चंगाई साधनों' पर निर्भर रहने का विचार जैसे चिकित्सक विज्ञान व तकनीकी विज्ञान चंगाई सेवकाई की समझ को सीमित कर देती हैं। और समय के अनुसार मिशन अस्पताल का उददेश्य कलिसिया में चंगाई सेवकाई को भूलते जा रहे हैं व उस से दूर हो रहे हैं। कलीसिया के पास चंगाई सेवकाई का स्वामित्व होता है, क्योंकि वह यीशु मसीह की शक्ति को व्यक्तियों के जीवन में वास्तविक बनाने के लिये परमेश्वर के स्पर्श का साधन होते हैं।

**3. चंगाई के बाद नई स्थितिः कलिसिया के सदस्य बनना**

चंगाई के बाद पीड़ित व्यक्ति की स्थिति बदल गई। जो व्यक्ति द्वार के पास बाहर बैठा करता था वह मन्दिर के अन्दर आ गया। उन ने शारिरिक, सामाजिक, आर्थिक चंगाई व बेहतर स्थिति पाई तथा विश्वास व आराधना करने वाले समुदाय का एक भाग बन गया। एक नये दैविक सम्बन्ध का विकास हुआ। वह वास्तविकता बन गई क्योंकि एक कलीसिया के सदस्य की वचनबद्धता तथा चंगाई पाने वाले को स्वीकार्यता मिली कि वह उन के साथ आराधना कर सके। कलीसिया के विकास में चंगाई सेवकाई का योगदान है।

आज पीड़ित व्यक्तियों का बिना बोले प्रश्न है "क्या हम अछूत हैं?" "क्या हमें कोई स्पर्श करेगा?" "क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो मुझे स्पर्श करेगा?" मनुष्य का स्पर्श जो मूल रूप से दैवीय मानवीय स्पर्श द्वारा चंगाई ला सकता है। क्या हम दैवीय स्पर्श का साधन बनने के लिये तैयार हैं?

**विचार के लिये प्रश्नः**

1. क्या हम प्रार्थनापूर्ण अपने विचारों द्वारा परमेश्वर के लिये किसी प्रकार के साधन बन सकते हैं?

2. क्या हम मानवता की सेवा करने के लिये यीशु मसीह की तरह उन के जीवनों को स्पर्श कर के परमेश्वर के साधन बन सकते हैं?

हमारे लिये प्रार्थना "प्रभु दैवीय चंगाकर्त्ता, मुझे व हम सब को पीड़ित मानवों के लिये आप की उपस्थिति, प्रेम व चंगाई की शक्ति के साधन बनायें।

इस्त्राएल डेविड ए
यूनियन बाईबल सेमीनरी, पूना

## चंगाई सेवकाई की आराधना विधि

## रविवार - 10 फरवरी 2019

## विषय : 'मुझे किस ने छुआ'? लूका 4:44-46

**1. आराधना के लिये बुलाहटः**

आईये हम परमेश्वर की आराधना करें, जो हमें स्वतन्त्र करते हैं, चंगाई व नया जीवन देते हैं।

सब थके हुये आओ, परमेश्वर के स्थिर प्रेम तथा अनन्त उद्धार के लिये परमेश्वर पर आशा रखो।

**हे प्रभु हमारे परमेश्वर, हम आप पर विश्वास करते हैं; आप हमारे सहायक व ढाल हैं।**

जो पीड़ा में हैं और कष्ट उठा रहे हैं, वे सब आओ

**हे प्रभु हमारे परमेश्वर, हम ने आप को पुकारा और आप ने हमारी सहायता की व चंगाई दी।**

आओ, हम परमेश्वर की आराधना करें जिस ने हमें चंगाई व क्षमा दी।

**हे प्रभु, हम आप के पास आप की प्रशंसा करने आते हैं जिस से हमें प्रसन्नता व राहत मिलती है, हम आप को आदर व सम्मान देते हैं क्योंकि आप ने हमें क्षमा किया है, और जो आप को पुकारते हैं उन्हें आप ने अपने अटूट प्रेम में बाँधा है। आमीन।**

**2. स्वागत :** इस चंगाई सेवकाई की रविवार की आराधना सभा में हमारे प्रभु व उद्धारकर्ता के नाम से हम आप सब का स्वागत करते हैं। हमारे सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर द्वारा प्रत्येक को चंगाई मिल सकी, इसी चंगाई की याद में हम इस दिन को मनाते हैं जिस के कारण इस संसार में हानि, पीड़ा, विपत्ति व निराशा में होते हुए भी हमें चंगाई मिलनी सम्भव हो सकी।

**3. आरम्भिक प्रार्थना/प्रतिदिन के लियेः** सर्वशक्तिमान परमेश्वर, आप सभी प्रकार की चंगाई के स्त्रोत हैं, हम आप के सम्मुख आते और आप की भलाई को याद करते हैं। जब भी हम ने आप की ओर देखा, आप ने हमें स्पर्श किया और चंगाई दी है। आप का स्पर्श महसूस करने में हमारी सहायता करें जिस से कठिन समय में भी हम आप पर विश्वास रखें। आप ने हमारे व्यस्त जीवन में से हमें बुलाया है, आप को आशा है कि ह्रदय की गहराई से हम उत्तर देंगे। आप की बुलाहट के उत्तर में हम आप की उपस्थिति में आये हैं, हम मानते हैं कि उस समय आप के इरादों में हम असफल रहे, संसार के लिये ठोकर का कारण बने। पृथ्वी पर आप के राज्य की खोज करने के लिये हमें प्रेरित करें। हमारी सहायता करें जिस से उद्धार की प्रसन्नता व आशा को समझ पायें त था हमेंशक्ति दें जिस से हमारे जीवन में चंगाई व आशा की नदी सदा बहती रहे। हम आप की आराधना करते हैं, हमारी प्रार्थना सुनें। हमारी सहायता करें जिस से हम आप की आज्ञा मानें। आमीन।

**4. आरम्भिक गीतः**

**5. प्रेरितों का विश्वास - वचन/नीकया का विश्वास वचन/ धन्यवादी प्रार्थना/पश्चाताप व पापों की क्षमा (विधि अनुसार)**

**6. बाईबल पाठः**

पहला पाठः यशायाह 6:1-8

दूसरा पाठः प्रेरितों के काम 3:1-10

तीसरा पाठः लूका 8:43-48

**7. चंगाई सेवकाई का परिचयः** चंगाई सेवकाई यीशु मसीह की करूणामय देखभाल, जीवन तथा कार्य पर आधारित है। उन के जीवन के कार्य जिस के लिए वह लगातार प्रत्येक को आमन्त्रित करते हैं जैसे - उपदेश देना, शिक्षा देना तथा स्वास्थय चंगाई सेवकाई आदि। वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन की सम्पूर्णता चाहते हैं। चंगाई अनेक प्रकार की होती है - इस में आत्मिक, मानसिक शारिरिक,भावनात्मक तथा सामाजिक चंगाई भी शामिल है। हमारे प्रभु व उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह प्रत्येक चंगाई का स्त्रोत हैं जो आरम्भ से अन्त तक है।

भारत में चंगाई सेवकाई का आरम्भ औपचारिक रूप से 1905 में मिशनरियों के समूह मेडिकल मिशनरी एसोसियशन (एम.एम.ए) द्वारा किया गया तथा 1926 में इसे बदल कर क्रिशचन मेडिकल एसोसियशन ऑफ इन्डिया नाम दिया गया। आज सी.एम.ए.आई के लगभग 300 क्रिशचन मिशन अस्पताल सदस्य हैं जिस में 2 प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज लुधियाना तथा वेलौर भी हैं। इस में दस हज़ार से अधिक क्रिशचन हैल्थ प्रोफेशनल एक साथ चंगाई सेवकाई के लिए काम कर रहे हैं। सी.एम.ए.आई के सदस्यों ने बहुत से क्षेत्रों में मार्गदर्शन किया है जैसे -कोढ़, टी.बी,मलेरिया तथा एच.आई.वी/एड्स। सी.एम.ए.आई का उद्देश्य भारत में चर्चों को सेवायें प्रदान करना हैतथा चंगाई सेवकाई के द्वारा यीशु मसीह के प्रेम तथा आदेश अनुसार उचित व स्वस्थ समाज बनाना है।

**8. उपदेश के लिये कुछ सुझावः विषय - 'मुझे किस ने छूआ'?**

**परिचयः** जब यीशु मसीह के आस पास बहुत भीड़ थी किसी ने उन्हें भिन्न प्रकार से छूआ। वह विश्वास व भरोसे का प्रभावशाली स्पर्श था। महिला के विश्वास के द्वारा चंगाई की शक्ति निकली।

**पुराना नियम**

- पुराने नियम में यशायाह भविष्यवक्ता ने यहूदा के राज्य में विद्रोही व्यक्तियों के लिये सन्देशवाहक चुने जाने पर परमेश्वर को सकारात्मक उत्तर दिया। पवित्रीकरण के लिये परमेश्वर ने सराफ को भेजा कि वह वेदी से कोयला उठा कर यशायाह के होठों को शुद्ध करे। इस प्रभावशाली स्पर्श से यशायाह को शुद्ध कर के परमेश्वर ने उसे सन्देशवाहक बनाया, उस के सब अधर्म दूर हुये।

**नया नियम**

- वह महिला जिसे 12 वर्ष से लहू बहने का रोग था, उस की दयनीय स्थिती थी।
- वह शारिरिक रूप से थक चुकी थी और लगातार लहू बहने के कारण उस के शरीर में रक्त की कमी हो गई होगी। हो सकता है उस के सारे आर्थिक साधन डॉक्टर्स से सलाह लेने और दवाईयों पर समाप्त हो गये हों।
- लैव्यव्यवस्था के कानून के अनुसार धार्मिक स्थानों पर समारोह में जाने के लिये उसे अशुद्ध माना जाता था, इसीलिये उस का सामाजिक बहिष्कार हो गया होगा, जिस से वह मन्दिर की आराधना में भाग नहीं

ले सकती थी। एक महिला का यहूदी रब्बी को स्पर्श करना, विशेष रूप से 'अशुद्ध' महिला का स्पर्श करना अस्वीकार्य था।

- इसीलिये उस महिला ने चुपके से पीछे से आ कर झुक कर यीशु मसीह के वस्त्र को स्पर्श किया।
- उस महिला का स्पर्श व विश्वास था जिस से उसे चंगाई मिली। जब यीशु मसीह के अन्दर से सामर्थ निकली तब उस महिला को दोबारा स्वास्थय मिला।
- इस प्रकार से यीशु मसीह ने व्यक्तियों की अशुद्धता अपने ऊपर ले ली और स्वंय 'अशुद्ध' बन गये।
- एक प्रकार से यीशु मसीह ने स्वंय को कमज़ोर बना लिया, हमारे पापों को अपने ऊपर ले कर क्रूस पर शर्मनाक मृत्यु सही। हम व्यवस्थाविवरण में पढ़ते हैं कि जो व्यक्ति पेड़ पर लटकाया गया वह शापित है।
- परन्तु जब उस स्त्री को चंगाई मिल चुकी थी तो यीशु मसीह वहाँ क्यों रूके।
- यीशु मसीह ने रूक कर उस की दुर्दशा की ओर ध्यान दिया क्योंकि उसे बताना था कि वह कोई बाधा नहीं है ना ही वह महत्त्वहीन है, उस का महत्त्व है। उसे कोई 'पुत्री' कह कर बुलाये उसे इस की आवश्यकता थी, उस के विश्वास को दृढ़ किया और सच्ची शान्ति के साथ उसे घर भेजा (लूका 8:48)। यीशु मसीह ने पूर्ण रूप से व गहराई से उसे चंगाई दी।

**निष्कर्ष**

जो व्यक्ति परमेश्वर की चंगाई सेवकाई में लगे हुये हैं उन्हें महान चंगाई कर्त्ता से सामर्थ पाने के लिये वस्त्र को छूने की आवश्यकता है। ऐसे व्यक्ति जो हमें मिलते हैं और अपनी पीड़ा या कष्ट नहीं बता सकते, उन का ध्यान कैसे रखना चाहिये? हम उन व्यक्तियों की देखभाल कैसे करेंगे जो संक्रामक घाव, त्वचा रोग, एच आई वी/एडस व विकलांगता से पीड़ित हैं, जिस के कारण उन्हें अछूत बना दिया गया है। यह बहुत आसान है कि ऐसे व्यक्तियों को किसी के पास भेज दिया जाये। परन्तु हमें यीशु मसीह के उदाहरण का अनुकरण करना चाहिये क्योंकि वह निम्न स्तर के व समाज द्वारा उपेक्षित किये गये व्यक्तियों तक पहुँचे। क्या जिन व्यक्तियों को आवश्यकता है ऐसे व्यक्तियों का स्वागत हमारे अस्पतालों व चर्चों द्वारा किया जाता है? यीशु मसीह ने कहा "वैद्य भले-चंगों को को नहीं परन्तु बीमारों के लिये आवश्यक है।" (मत्ती 9:12) क्या हम अपने पड़ोसियों के लिये एक नेक सामरी हैं? जिन व्यक्तियों को चंगाई की आवश्यकता है क्या हम उन के लिये ह्रदय की गहराई से दयालु हैं?

**प्रार्थनाः**

**9. परहित निवेदन प्रार्थना**

**अगुवाः** प्रेमी प्रभु, आप का चंगाई स्पर्श पाने के लिये हम आप के सम्मुख आते हैं। आप के द्वारा सब कुछ सम्भव है। हम अपने ह्रदय आप की ओर लगायें और आप हमारे मस्तिष्क, शरीर व आत्मा को नया करें। एक खोई हुई भेड़ के समान हम आप के अनुग्रह को ढूँढते हैं। जब हम विश्वास में जीवन की यात्रा करते हैं तो हमें इतनी शक्ति दें कि जो मार्ग हमें दिखाया गया है उस में आगे बढ़ें।

**सबः हे दयावान प्रभु, हमारी प्रार्थना सुने**

**अगुवाः** स्वर्गीय पिता, आप ने अपने पुत्र को पीड़ा सहने, हमारे लिये मारे जाने के लिये हमारे बीच में भेजा, उस के घायल होने से हमें चंगाई मिली। प्रभु यीशु मसीह जब आप पृथ्वी पर थे आप ने रोगियों को चंगा किया, गरीबों की देखभाल की। हमारी सहायता करें जिस से हम जिन की देखभाल करते हैं उन से प्रेम करें जैसे आप ने उन से प्रेम किया। हम विशेष रूप से उन के लिये प्रार्थना करते हैं जो उपचार व चंगा करते हैं और अस्पतालों, बूढ़े व्यक्तियों के लिये होम व अपने घरों में देखभाल का कार्य करते हैं। प्रेमी परमेश्वर आप उन्हें सिखायें कि वह अपना उत्तम भाग दें, प्रेम से बात करें तथा उत्साह से कार्य करें। जो भी वरदान आप ने उन्हें दिये हैं उस के अच्छे भण्डारी बनें और जो कमज़ोर व थके हुये हैं उन्हें आत्मा में उत्साहित करें।

**सबः हे दयावन प्रभु हमारी प्रार्थना सुनें**

**अगुवाः** हम रोगी, कमज़ोर तथा सभी परेशान व्यक्तियों के लिये प्रार्थना करते हैं विशेष रूप से बच्चों के लिये प्रार्थना करते हैं जो किसी रोग से पीड़ित हैं, आप का चंगाई वाला स्पर्श उन की आशा है। चंगाई व सम्पूर्णता से आप की उपस्थिति को महसूस करें, उन के शरीर ज्योति व सच्चाई से भर जायें। हम रोगियों के प्रेमी जनों के लिये भी प्रार्थना करते हैं। जब वह रोगी व्यक्ति की देखभाल करते हैं उन के असहाय समय में आशा व शान्ति रूपी प्रकाश बनें।

**सबः हे दयावन प्रभु हमारी प्रार्थना सुनें**

**अगुवाः** सर्वशक्तिमान परमेश्वर हम सी एम ए आई के सदस्यों तथा पूरे देश के सदस्यों के लिये प्रार्थना करते हैं कि रोगी, पीड़ितों तथा जो परेशानी में हैं उन्हें आप के पुत्र का प्रेम दर्शायें। जब हम यीशु मसीह के कदमों पर चलते हैं, जिन्हें विशेष अधिकार नहीं है व इस देश में जो निम्न स्तर के व्यक्ति हैं, हम प्रार्थना करते हैं कि आप के चेहरे का प्रकाश हम पर लगातार चमके। हम विश्वास में मज़बूत रहें जिस से आप से स्पर्श पा कर लगातार व्यक्तियों की सेवा करने में हमारी सहायता करें।

**सबः हे दयावान प्रभु हमारी प्रार्थना सुनें।**

**अगुवाः** प्रभु हम प्रार्थना करते हैं सी.एम.ए.आई के लिये जो भारत के चर्चों के लिये स्वास्थय का हाथ है। चर्चों के बहुत से मेडिकल मिशन, डॉक्टर्स, नर्सें, एलाईड हैल्थ प्रोफेशनल्स, चेपलेन्स, एडमिनिस्ट्रेटर्स तथा अन्य व्यक्ति जो परिश्रम कर के गरीबों अयोग्य तथा उपेक्षित व्यक्तियों की देखभाल करते हैं, सब को आपके सामने अर्पित करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि आप उन पर दया करें और अपने चंगाई वाले स्पर्श के सन्देशवाहक बनें। आप उन्हें बुद्धि, साहस तथा सम्पूर्णता दें। जब हम सेवकाई करते हैं तो आप के प्रेम व अनुग्रह का स्पर्श पाने में हमारी सहायता करें।

**सबः हे दयावान प्रभु हमारी प्रार्थना सुनें।**

(अगुवा इस प्रार्थना में और भी प्रार्थना निवेदन जोड़ सकते हैं तथा पास्टरल प्रार्थना कर के आराधना समाप्त कर सकते हैं)

**गीतः-(दान)**(यदि प्रभु भोज का दिन है तो कृपया विधि अनुसार प्रभु भोज के साथ आराधना को आगे बढ़ा सकते हैं और अन्तिम प्रार्थना व आशीष वचन के साथ आराधना समाप्त कर सकते हैं।)

**जो दान चंगाई सेवकाई रविवार में एकत्र हो उसे डी डी/चैक 'सी एम ए आई, नई दिल्ली' के पक्ष में डाक द्वारा इस पते पर भेजें - सी एम ए आई ऑफिस, प्लॉट नं: 2, ए-3 लोकल शॉपिंग सेन्टर, जनक पुरी, नई दिल्ली-110 058**

**यदि आप नकद या किसी भी रूप में सीधे अस्पताल में योग दान देना चाहते हैं तो कृपया हमें ई-मेल cmai@cmai.orgऔर imtimenla@cmai.orgपर ऑफिस के रिकॉर्ड क लिये सूचित करें।**